गुणों का सामन्जस्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवन में गुणों को स्थान देना हमारा कर्तव्य है। हमर धर्म का अपना दर्शन है। विश्वविद्यालयों में धर्म और दर्शन का पठन–पाठन होता है। मानव जीवन बहुत ही दुर्लभ है। मानव जीवन का मिलना, ईश्वर में श्रद्धा और अच्छे व्यक्तियों की सत्संगति प्राप्त होना भाग्य की बात है। सद्‌गुण से ही श्रद्धा बढ़ती है। इस संसार में अनेक ज्ञानी महापुरूष हैं, किन्तु जिसने ज्ञान को अपने चरित्र में उतार लिया है वही असली ज्ञानी है। हमारे देश में ज्ञान को उतना महत्व नहीं दिया गया है जितना आचार को पहले स्वयं में सुधार होना चाहिए फिर समाज को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं बुराई को छोड़ो सुधार अपने से प्रारम्भ होता है। संत महात्माओं के उपदेश का प्रभाव इसलिए होता है कि वे स्वयं सद्‌गुणी होते हैं। उनका आचरण और चरित्र अनुकरणीय होता है। इसलिए उनका प्रभाव समाज पर पडता है। मानव को अवगुणों को दूर कर गुणों को बढ़ाना चाहिए। गुणों के विकास से आत्मा विशुद्ध हो जाती है। इस जीवन में तीन बातें बहुत महत्वपूर्ण है–हेय, ज्ञेय और उपादेय । हेय का अर्थ है बुराइयें को छोड़ना। ज्ञेय का अर्थ है सद्‌गुणों को ग्रहण करना और उपादेय का अर्थ है सद्‌गुणों को जानकर आचरण में उतारना। हम गुण कैसे प्राप्त करें इसके लिए महापुरूषों के चरित्र को जानना आवश्यक है। हमें दूसरों के अवगुणों को नहीं बल्कि सद्‌गुणों को ग्रहण करना चाहिए। परिवर्तन के लिए विचारों में परिवर्तन लाना आवश्यक है। व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है। यदि व्यक्ति का सुधार हो जोय तो समाज और राष्ट्र अपने आप सुधर जायेगें।

जीवन में उन्नति का सबसे बड़ा सूत्र है– ईमानदारी। ईमानदार व्यक्ति सबका पूजनीय होता है और उस पर सब विश्वास करते है। जीवन के हर क्षेत्र में ईमानदारी सत्कार योग्य होती है। चाहे दुकानदार हो, चाहे अधिकारी हो, चाहे मंत्री हो या संतरी सबके लिए ईमानदारी उचित है। ग्राहक को यह विश्वास हो जाता हैं कि अमुक दुकान से लिया गया समान शुद्ध रहता है। ग्राहक का विश्वास जम जाता है तो वह उसी दुकान से सब सामान खरीदता है। इससे दुकानदार को लाभ होता है। अधिकारी यदि ईमानदार होता है तो जनता को बहुत राहत

मिलती है। जनता कार्य आसानी से हो जाता है। धन और समय की बचत होती है। मंत्री यदि ईमानदार होते हैं तो पूरा शासनतन्त्र उसी मार्ग पर चलता है। लोगों का विश्वास सरकार पर होता है। ऊपर से लेकर नीचे तक पूरा चैनल ही मंत्री के ईमानदार होने पर सही ढ़ंग से कार्य करता है। हमारे देश भारत में राजा हरिशचन्द्र की कथा आज भी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध है। राजा हरिशचन्द्र ने स्वप्न में देखे गये सत्य के आधार पर अपना राज–पाट त्याग दिया था और एक डोम के यहां नौकरी करके अपना जीवन–यापन किया। ईमानदार व्यक्ति का चरित्र चौवीस कैरेट सोने के समान खरा होता है। जितना ही उसका परिक्षण होता है उतना ही उसमें निखार आता है। ईमानदारी मानव जीवन का सबसे बड़ा गुण है। चरित्रवान् व्यक्ति सर्वत्र पूजनीय होता है। कहा भी गया है कि यदि चरित्र भ्रष्ट हो जाये तो उस आदमी पर कोई विश्वास नहीं करता। किन्तु आज के युग में मनुष्य का उद्देश्य एकमात्र धन कमाना है। ईमानदारी को लोग महत्व नहीं दे रहे है।

भ्रष्टाचार समाज में आकंठ व्याप्त है। किसी भी कार्यालय में जाइये। बिना पैसे के काम होना मुश्किल है। धीरे–धीरे लोगों को विश्वास ही अधिकारियों पर से उठता जा रहा है। परीक्षा संचालित करने वाली संस्थाएं घूसखोरी का अड्डा बन गयी है। बिना परीक्षा दिये ही पैसे के बल पर लोग नौकरी प्राप्त कर ले रहे है। अनेकों बार शासन के द्वारा जांच करायी जाती है, परीक्षाओं को रद्द कर दिया जाता है। जिससे पढ़ने वाले छात्रों को उनके परिश्रम का वास्तविक मूल्य नहीं मिल पाता। यदि इस प्रवृत्ति को रोका नहीं गया तो यह समाज के लिए बहुत घातक सिद्ध होगी। पहले ईमानदारी केन्द्र में थी, किन्तु आजकल धन केन्द्र में हो गया है। जिसका परिणाम यह है कि भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार हो गया है। भरोसेमंद होना, दूसरों को हमारे भरोसेमंद प्रकृति के बारे में आस्वस्थ करके सम्बन्धों को मजबूत बनाने में मदद करता है। जो लोग बेईमान होते हैं उन्हें लोगों से एक बार झूठ बोलने के बाद शायद ही दूसरा मौका मिलता है। ईमानदारी जीवन में एक अच्छे हथियार की तरह हैं। जो हमें बहुत से लाभों के द्वारा लाभान्वित करती है। ईमानदारी हमें जीवन में सबकुछ देती है। झूठ रिश्तों को तोड़ देता है। एक झूठा व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों अन्य सगे–सम्बन्धियों के दिलों में से अपने लिए भरोसा खो देता है। ईमानदारी जीवन में सफलता

प्राप्त करने का सबसे अच्छा सूत्र है। जीवन में ईमानदार न होना, किसी के भी साथ वास्तविक और भरोसेमंद मित्रता या प्यार का रिश्ता बनाने में कठिन होता है। वे लोग जो आमतौर पर सत्य बोलते हैं वे बेहतर संसार बनाने में सक्षम होते है। कुछ लोग अपने प्रिय लोगों से झूठ बोलकर उन्हें ठग लेते है। ऐसे व्यक्ति के चरित्र पर कलंक का छींटा पड़ जाता है। जीवन में पूरी तरह ईमानदार होना कठिन जरूर है लेकिन यह नीति जीवन में साथ–साथ चलती है। बेईमान होना बहुत ही आसान होता है। किन्तु बेईमानी थोड़ी दूर तक साथ देती है। ईमानदारी भगवान का उपहार है।